❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा विभेर्न मरिष्यसि।।

अथर्व. 5/30/8

हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।

O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 40, अंक 43 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 अगस्त, 2017 से रविवार 27 अगस्त, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 10
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के संयुक्त तत्त्वावधान में माण्डले में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार – 2017 (मांडले) की तैयारियां जोरों पर

ब्रह्मदेश में वेद की ज्योति और बढ़ाने : आओ चलें म्यामांर

म्यांमार के मध्य में बसने वाले शहर मांडले का आर्य महासम्मेलन के लिए चुना जाना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। यह स्वतंत्र बर्मा की भूतपूर्व राजधानी, मुख्य व्यापारिक नगर एवं आवागमन का केंद्र है जो इरावदी नदी के बाएँ किनारे पर रंगून से लगभग 350 मील उत्तर दिशा में बसा है, कहते हैं 1856-57 ई. में राजा मिंडान ने बसाया था। शहर में बौद्ध धर्मावालम्बियों के अतिरिक्त हिन्दू, मुसलमान, यहूदी, चीनी एवं अन्य जाति के लोग निवास करते हैं। द्वितीय महायुद्ध के समय 1942 ई. को

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार

6, 7, 8 अक्तूबर, 2017

तदनुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३ सम्वत् २०७४

-: सम्मेलन स्थल :- अम्बिका मन्दिर परिसर, मांडले, म्यांमार

जापानियों ने इस पर अधिकार कर लिया था। उस समय राजमहल की दीवारों के अतिरिक्त लगभग सभी इमारतें जल गई थीं। तब जापानियों ने इसे "जलते हुए खंडहरोंवाला नगर" कहा था हालाँकि आज मांडले से बर्मा की सभी जगहों के लिये स्टीमर सेवाएँ हैं तथा यह रेल एवं सड़क मार्ग द्वारा भी देश के अन्य भागों से जुड़ा है। कभी वैदिक सभ्यता काल के इस ब्रह्मदेश में आज पगोडा शैली में बने भवन व मंदिर बौद्ध स्पुत बौद्ध धर्म से जुड़ी आस्था के केंद्र होने का आसानी से पता चल जाता है।

मांडले का मौसम लगभग भारत जैसा ही है। सर्दियों में कड़ी सर्दी, गर्मियों में आकाश से लेकर धरती तक भट्टी की तरह तपती है तो बरसात में भारी वर्षा भी यहाँ होती है। मंदिरों, प्राकृतिक सुषमा और सौन्दर्य से भरपूर यह शहर अपनी अनेक विशेषताओं के कारण भी जाना जाता है। यहाँ दुनिया की सबसे बड़ी पुस्तक के रूप में एक मंदिर विधमान है यानि कि किताब के हर पृष्ठ के रूप में एक मंदिर बना है जिनकी संख्या करीब 500 से ज्यादा है। शेष पृष्ठ 5-6 पर

27वां आर्य महासम्मेलन अमेरिका सम्पन्न : न्यूयार्क शहर में निकाली गई शोभा यात्रा

अमेरिका में आर्यसमाज के विस्तार की अपार सम्भावनाएं
– विनय आर्य, महामन्त्री दिल्ली सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्त्वावधन एवं द्रोपदी निज्ञासु आश्रम न्यूयार्क के आतिथ्य में अमेरिका के न्यूयार्क शहर में 27वां आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया। आर्य महासम्मेलन का आयोजन अमेरिका में आर्य समाज की स्थापना करने वाले तथा उसको पल्लवित करने वाले आचार्य धर्मजीत जिज्ञासु की

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, महाशय धर्मपाल जी, एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए भेजा अपना आशीर्वाद एवं शुभकामना सन्देश

शेष पृष्ठ 10 पर

महासम्मेलन के अवसर पर निकाली गई शोभायात्रा का नेतृत्व करते स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, श्री विश्रुत आर्य जी, श्रीभुवनेश खोसला जी एवं अन्य आर्यजन एवं मातृ शक्ति। शोभायात्रा में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज, ओ३म् ध्वज एवं अमेरिका के ध्वज के साथ शामिल विभिन्न देशों से पधारे सैकड़ों आर्यजन

दिल्ली में संचालित आदिवासी गुरुकुलों की कन्याओं ने एवं बच्चों ने महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद एवं प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को बाधें रक्षासूत्र

रक्षाबन्धन के शुभ अवसर पर आर्य गुरुकुल रानीबाग, एवं शान्ती देवी आर्य कन्या गुरुकुल के बच्चों ने राष्ट्रपति भवन पहुंच कर महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी एवं उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधे तथा स्वयं तैयार किया

हुआ चित्र भी भेंट किया। इस इवसर पर बच्चे प्रधानमन्त्री आवास भी पहुंचे और प्रधानन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को रक्षा सूत्र बांधे। बच्चों के साथ हैं गुरुकुल अध्यापिका सर्वश्रीमती अन्नू बासुदेव, ज्ञानदेवी, सुमेधा जी, सुषमा चावला जी भी उपस्थित रहीं।

– जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी को चित्र भेंट एवं धर्मपत्नी को रक्षा सूत्र बांधते बच्चे। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को रक्षासूत्र बांधती गुरुकुल सैनिक विहार की छात्राएं।

वेद-स्वाध्याय

आत्मा का सिंहनाद

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद् धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन।। -ऋ. 10/48/5
ऋषिः **इन्द्रो वैकुण्ठः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **विराड्जगती।।**

शब्दार्थ अहं इन्द्रः= मैं आत्मा हूं **धनं न पराजिग्ये इत्**= मैं ऐश्वर्य को कभी हार नहीं सकता। **मृत्यवे न कदाचन अवतस्थे**= मृत्यु कभी भी मुझे नहीं आ सकती। **हे पूरवः**= हे मनुष्यो! **सोमं सुन्वन्तः इत् मा वसु याचत**= यज्ञार्थ कर्म करते हुए ही मुझसे ऐश्वर्यों को मांगो। **मे सख्ये न रिषाथन**= मेरी मैत्री (सख्य) में रहते हुए तुम कभी नष्ट नहीं होओगे।

विनय - मैं इन्द्र आत्मा हूं। मैं कभी भी हराया नहीं जा सकता। मेरा ऐश्वर्य कभी भी छीना नहीं जा सकता। प्रकृति के साथ मेरी लड़ाई ठनी है। प्रकृति मेरे ऐश्वर्य छीनना चाहती है, परन्तु मैं प्रकृति के साथ लड़ी गई अपनी प्रत्येक लड़ाई में विजयी होता हूं और जितना-जितना विजयी होता जाता हूं उतना-उतना मुझमें मेरा नया-नया ऐश्वर्य प्रकट होता जाता है। मैं कभी भी प्रकृति से हार नहीं खा सकता। ऐसा क्यों न हो? मैं तो मौत को भी खा जाने वाला हूं। सब संसार को खानेवाली मौत भी मेरे सामने नहीं ठहर सकती। मैं अमर आत्मा हूं। मृत्यु से बढ़कर और किस हथियार से प्रकृति मुझे जीतेगी? हे मनुष्यो! तुम मेरे पास खड़े होकर देखो और बोलो-''मैं अमर हूं! मैं अमर हूं!'' तुम कहां प्रकृति की मोहिनी मूर्ति के सामने ऐश्वर्यों के लिए गिड़गिड़ाते फिरते हो? यह माया तुम्हें धोखा ही दे सकती है, ऐश्वर्य नहीं दे सकती। इससे जो कुछ ऐश्वर्य मिलते तुम्हें दीखते हैं वे सब वास्तव में मेरी शक्ति से ही मिलते हैं। इसलिए आओ, मनुष्यो! तुम मुझसे ऐश्वर्य मांगो। मैं तुम्हें सब-कुछ दूंगा, परन्तु एक शर्त है। सोम का सवन करते हुए-यज्ञार्थ कर्म करते हुए ही तुम मुझसे ऐश्वर्य मांगो। संसार में सच्चा सोम का रस आत्म-ज्ञान ही है- सच्चा ज्ञान, भक्तिभरा आत्मज्ञान ही है। इस ज्ञान के निष्पादन करने में सहायक तुम्हारे जितने कर्म हैं वे सब सोम-सवन ही हैं। ये यज्ञार्थ कर्म हैं। ये यज्ञ-कर्म तुम्हें अमर बनाते हैं, तुम्हें मुझ आत्मा के पास लाते हैं, ये 'आत्म[1] 'विशुद्धये' होते हैं, अतः खूब यत्न = उद्योग के साथ इस सोम का सवन करते हुए तुम मुझसे जो कुछ मांगोगे वह मैं तुम्हें अवश्य दूंगा। अरे! तुम्हें एक के बाद एक अनमोल ऐश्वर्य मिलता जाएगा। तुम कहां इस माया के पीछे पड़े हुए ठीकरियां बटोर रहे हो? मुझसे तुम अन्दर का खज़ाना क्यों नहीं मांगते? हे मनुष्यो! तुम मुझ आत्मा से मैत्री करो तो तुम विनाश से पार हो जाओगे। इन प्रकृति के गुणों से बहुत दिन दोस्ती कर ली। मुझ से मैत्री करके देखो! यह दावा है कि मेरे मित्र का इस संसार में कोई नाश नहीं कर सकता।

हे नर-तन पानेवालो, सुनो! तुम्हारे ही आत्मा का यह सिंहनाद है। तुम्हारा आत्मा गरज रहा है, सुनो! **सन्दर्भ : 1. गीता 5/11**

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

तो क्या भूटान भी तिब्बत बन जाएगा...?

पिछले डेढ़ दो महीने से लेकर अभी तक हर रोज सुबह समाचार पत्रों में चीन की धमकी भरी एक खबर जरुर होती है। हो भी क्यों ना! क्योंकि 16 जून 2017 को जब चीनी सैनिक, चुंबी घाटी के दक्षिण में स्थित उसी विवादित डोकलाम इलाके में घुस आए तब भारत ने वह किया जो उसने 1950 में नहीं किया था। लेकिन 67 वर्ष बाद अब भारत अपने करीबी दोस्त के बचाव में उतर आया और इस समय ये दोस्त है भूटान- इसके बाद चीन द्वारा अपने सरकारी प्रवक्ताओं और सरकारी मीडिया की पूरी फौज भारत को तरह-तरह से डराने के लिए छोड़ दी गयी। हर रोज चीन का सरकारी अखबार ग्लोबल टाइम्स भारत के खिलाफ जहर उगलता दिखा। चाइना का थिंक टैंक कभी कश्मीर में घुसने की धमकी दे रहा है तो कभी सिक्किम में षडयंत्र करने की-जब यहाँ भी उसकी धमकी का असर वर्तमान केंद्र की सरकार पर होता नहीं दिखा तो उसकी ओर से भूटान से लेकर भारत के पूर्वोत्तर राज्यों तक में भी भारत को देख लेने की धमकी दी जाने लगी। शायद बीजिंग ने कभी नहीं सोचा होगा कि थिंपू को बचाने के लिए दिल्ली इतने आगे बढ़ जाएगी।

यदि बीता इतिहास खंगालें तो भारत ने आजादी के बाद ल्हासा में अपना प्रतिनिधि ब्रितानी आईसीएस अफसर ह्यूज रिचर्ड्सन को चुना। वे 1947 से 1950 तकभारतीय मिशन के इंचार्ज थे। 15 जून 1949 को भारत के विदेश मंत्रालय को भेज़े गए संदेश में उन्होंने सुझाव दिया था कि भारत असाधारण परिस्थितियों में चुंबी घाटी से लेकर फरी तक कब्जा करने के बारे में विचार कर सकता है। चुंबी घाटी, भूटान और सिक्किम के बीच राजनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण तिकोना इलाका है। इसके 16 महीने बाद, चीनी फौज पूर्वी तिब्बत में घुस आई- उस समय सिक्किम के राजनीतिक मामलों के अफसर हरिश्वर दयाल थे। उन्होंने रिचर्ड्सन जैसा ही संदेश दिल्ली को भेजा- उनका सुझाव था कि उस समय भारत सरकार ने रिचर्ड्सन की सलाह पर ध्यान नहीं दिया। जबकि ये 'शुद्ध रूप से एक रक्षात्मक उपाय का सुझाव था और इसमें आक्रमण की कोई मंशा नहीं थी। लेकिन अब चीन इस इलाके में घुस आया है।

........चीन में एक कहावत कि एक कदम चलो उसके बाद लोगों की प्रतिक्रिया देखो, दूसरा कदम चलो, फिर लोगों की प्रतिक्रिया देखो, यदि कोई रोक डांट न हो तो बढ़ते चले जाओ। इस वजह से भी चीन को इस सिद्धांत में विश्वास करने की आदत रही है कि पहले कब्जा करने और बाद में बातचीत शुरू करना बेहतर है। इसी नीति के तहत आज उसने दक्षिण चीन सागर के आधे से ज्यादा हिस्से पर कब्जा कर लिया है। ....

आज डोकलाम विवाद पूरी विश्व मीडिया की सुर्खियाँ बन रहा है। चाइना का आर्थिक गुलाम पाकिस्तान अपने न्यूज रूम में बैठा युद्ध की बाट जोह रहा है तो यूरोप की मीडिया साफ सधे शब्दों में चाइना की इस हरकत पर आलोचना कर युद्ध से बचने की सलाह भी दे रही है।

भूटान के डोकलाम भूभाग का राजनैतिक महत्त्व है। इसलिए चीन उसको शायद एकतरफा तरीके से कब्जा करने की कोशिश कर रहा है। भूटान उसको अपना क्षेत्र मानता है और यह मामला भी वहीं का है जहां सीमा अनिश्चित है। दो देशों के साथ चीन की सीमा अभी पूरी तरह निर्धारित नहीं हुई है। इनमें से एक भूटान और दूसरा भारत है। भारत का भी इसमें एक किरदार इसलिए है कि तीनों देशों के बीच में भी एक समझौता है कि जहां भी ट्राई जंक्शन होगा यानी जिस बिन्दु पर तीनों देशों की सीमाएं तय होंगीं, वह तीनों देशों के बीच बातचीत से ही तय होगी। चीन की इस एक तरफा आक्रामक कोशिश का विरोध करना जरूरी है।

भारत और भूटान के बीच जो संधि है, उसके मुताबिक भारत का अब तक का जवाब बिल्कुल सही कहा जाएगा। इसमें भारत के भी अपने निजी, राजनीतिक और बहुत अहम हित हैं। सब जानते हैं कि डोकलाम के नीचे चुंबी वैली है, जिसे हम चिकेन्स नेक कहते हैं, जो पूर्वोत्तर भारत का संपर्क मार्ग यानि सिलीगुड़ी कारिडोर है। भूटान ने यह साफ कहा है और भारत इस बात का समर्थन करता है। चीन का रुख यह है कि आपको डोकलाम पर नहीं आना चाहिए लेकिन दुनिया जानती है और वस्तु-स्थिति यह है कि चीन भूटान की सीमा में घुस आया है। भूटान छोटा देश है लेकिन हर देश सम्प्रभु होता है। दोनों देशों के बीच यानी भूटान-चीन के बीच और भारत-चीन के बीच ये समझौते अलग से हैं कि सीमा पर जब तक बातचीत चल रही है, तब तक विवादित सीमा पर शांति बहाल रहे।

भारत भूटान के समर्थन में खड़ा है। जिस तरह से भारत भूटान के समर्थन में खड़ा हो सकता है। हमें उसका प्रयास करना चाहिए। यदि आज वहां खड़े नहीं हुए तो कल भूटान का तिब्बत बनाने में ड्रेगन कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगा चाइना में एक कहावत कि एक कदम चलो उसके बाद लोगों की प्रतिक्रिया देखो, दूसरा कदम चलो फिर लोगों की प्रतिक्रिया देखो यदि कोई रोक डांट न हो तो बढ़ते चले जाओ इस वजह से भी चीन को इस सिद्धांत में विश्वास करने की आदत रही है कि पहले कब्जा करने और बाद में बातचीत शुरू करना बेहतर है। इसी नीति के तहत आज उसने दक्षिण चीन सागर के आधे से ज्यादा हिस्से पर कब्जा कर लिया है। चीन के दादागिरी भरे रवैये से उसके पड़ोसी देश जापान, वियतनाम, दक्षिण कोरिया आदि देश भी खार खाए बैठे हैं।

आज चीन अपना विस्तार चौतरफा कर रहा है। इस विस्तार को कई मोर्चो पर चीन अंजाम दे रहा है। चीन खुद का विस्तार रोड, रेल, आर्थिक शक्ति और तकनीकी विकास के माध्यम से कर रहा है। इसके साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप में चीन बड़ी नौसैनिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। लेकिन उसके इस उभार में उसे आर्थिक और सामरिक तौर पर भारत चुनौती देता दिख रहा है।

हालाँकि विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने साफ किया है कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है क्योंकि युद्ध के बाद भी समस्याओं का निपटारा बातचीत से ही हल होता है। 2014 में चीन ने भारत में 116 बिलियन डॉलर का निवेश किया जो आज की तारीख में 160 बिलियन डॉलर हो गया है। चीन ने इतना ज्यादा भारत में निवेश किया है। हमारी आर्थिक क्षमता बढ़ाने में चीन भी मदद कर रहा है। मामला केवल डोकलाम का नहीं है। जिस देश में चीन इतना ज्यादा निवेश कर रहा है क्या उस देश से युद्ध चाहेगा? *-सम्पादक*

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरन्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक अपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अतः ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - *सम्पादक*

शोध लेख

कैसे बना पाकिस्तान?

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

......पाकिस्तान कैसे बना, इस इतिहास को प्रचार माध्यमों ने जन-मानस से प्राय: तिरोहित ही कर दिया है। अब तक की किसी भी सरकार ने उसे याद करना, याद रखना, याद कराना 'समीचीन नहीं समझा। उल्टे उसे भुलाना ही अपनी गद्दी को सुरक्षित रखने का एक सुगम उपाय समझा। पाकिस्तान की स्थापना की पूर्वपीठिका में ही उसको मिटाने के उपाय निहित हैं।........

सन् 1857 की क्रांति के समाप्त होने पर सर सैयद अहमद खां ने एक लेखमाला 'गदर के सबब' (कारण) शीर्षक से लिखी और अंग्रेज हुक्काम को सफाई देते हुए लिखा कि आम मुसलमान ब्रिटिश सरकार का फर्माबर्दार है और कथित गदर में भाग लेने वाले मुसलमानों के अपराध भी क्षमा योग्य हैं। जब 1885 में एक अंग्रेज नौकरशाह ए.ओ. ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना कर जनभावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए एक मञ्च बनाया, तो सर सैयद ने एक लेखमाला में कांग्रेस के मूलभूत मन्तव्यों की आलोचना की और मुसलमानों से अपील की कि वे कांग्रेस से दूर रहें। इस पर पंजाब से कांग्रेस का प्रतिनिधित्व करने वाले लाला लाजपतराय ने एक विस्तृत लेखमाला लिखकर सर सैयद के भ्रामक विचारों का जोरदार खण्डन किया। इसके लिए उन्हें ह्यूम से शाबाशी भी मिली।

1905-06 तक आते-आते कांग्रेस में नरमदल का वर्चस्व खत्म होता दिखायी दिया। लाल-बाल-पाल की त्रिपुटी ने सविनय अवज्ञा, बायकाट जैसे हथियारों के सहारे जहां अंग्रेज हुकूमत का सक्रिय विरोध करने का निश्चय किया, वहीं उन्होंने प्रेयर (मात्र प्रार्थना करना) तथा प्रोटेस्ट (प्रतिरोध में प्रस्ताव पास करना) की राजनीति करनेवाली कांग्रेस का चेहरा बदल देने का निश्चय किया। कांग्रेस के इस बदलते स्वरूप को देखकर खुशामद पसन्द, जी-हुजूरिये मुसलमानों में हलचल मची और इसके प्रतिकार में उन्होंने साम्प्रदायिक मांगों को बल देते हुए अंग्रेजों के इशारे पर 1906 में मुस्लिम लीग का गठन किया। सर सैयद के रुख में बदलाव तो पहले ही आ गया था। हिन्दू और मुसलमानों को 'मादरे वतन की दो आंखें' बताने वह सर सैयद को पाला बदलते देर नहीं लगी और वे कट्टरवादी मुसलमानों के खेमे में आ गये।

नवगठित मुस्मिल लीग ने सर आगा खां के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमण्डल वायसराय के हुजूर में भेजा तथा उन्हें बहुमत वाले हिन्दुओं से मुसलमानों के स्वत्वों की रक्षा करने की गुहार की। 1914-15 तक कांग्रेस में सक्रिय रहे मोहम्मद अली जिन्ना भी गांधी जी द्वारा कांग्रेस की नीति-रीति को बदलते देखकर एक बार तो चौकन्ना हुए और स्वदेश की राजनीति में, बकौल अकबर इलाहाबादी 'गांधी की गोपियों' (गांधी जी की विचारधारा के अनुयायी) का वर्चस्व देखकर राजनीति से 'तोबा' कर ली। अपनी वकालत चलाने के लिए उन्होंने लन्दन का रुख किया, वहां पर प्रिवी कॉन्सिल के बार रूम में सक्रिय हो गये। 1921 के आसपास खिलाफत आन्दोलन के असफल हो जाने पर भारतीय मुसलमानों में अवसाद की स्थिति उत्पन्न हुई। इस कुण्ठा और अवसाद ने साम्प्रदायिक दंगों को जन्म दिया। क्वेटा तथा कोहाट जैसे मुस्लिम-बहुल नगरों में बेकसूर हिन्दुओं के खून से होली खेली गई। खिलाफत के नाम पर गांधी जी के चेले बने मौलाना मोहम्मद अली और शौकत अली भी उनसे किनारा कर बैठे और अब उन्हें गांधी जी की तुलना में एक पतित और दुराचारी मुसलमान कहीं श्रेष्ठ लगने लगा। बहुत प्रयत्न करने पर भी कांग्रेस मुसलमानों को राष्ट्र की समान धारा में लाने में असमर्थ रही। 1937 में जो कांग्रेस सरकारें कई प्रान्तों में बनीं, वे भी कांग्रेसी अदूरदर्शिता की शिकार बनकर खत्म हो गयीं और 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ते ही गांधी ने उन सरकारों से त्यागपत्र दिलवा दिये। कांग्रेस द्वारा पृथक निर्वाचन की मांग मान लिये जाने पर भी कट्टरपंथी मुस्लिम नेताओं की मांगें सुरसा के मुख की भांति बढ़ती गयीं। अन्तत: 1940 में मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में मुसलमानों के पृथक् देश पाकिस्तान के निर्माण की मांग का प्रस्ताव पास हुआ और लीग के इस पृथकतावादी प्रस्ताव की बिभीषिका दिन-प्रतिदिन उग्रतम होकर प्रकट होने लगी। आज लाहौर में उस घटना की याद में 'मीनारे-पाकिस्तान' नामक स्तम्भ खड़ा है।

मुस्लिम लीग का यह दावा तो तथ्यहीन ही था कि यही वह जमात है जो भारत के समस्त मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती है। दरअसल उत्तर भारत, मुख्यत: यू.पी. और बिहार का एक सम्पन्न मुस्लिम जमींदार वर्ग लीग का समर्थक था। खुद जिन्ना ने वकालत से लाखों रुपये कमाये थे। उनके अनुयायी उत्तर प्रदेश के जमींदारों, यथा नवाबजादा लियाकत अली खां, चौधरी खलीकुज्जमा, नवाब एजाज रसूल, राजा महमूदाबाद आदि ने जिन्ना का साथ दिया। बंगाल में लीग का नेता हसन शहीद सुहरावर्दी अविभाजित बंगाल का प्रीमियर बना। सिन्ध के राष्ट्रवादी मुसलमान अल्लाबख्श की जिन्ना द्वारा हत्या करा देने से देश-विभाजन के पहले ही सिन्ध में लीगी मन्त्रिमण्डल का सर गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला के नेतृत्व में गठन हुआ, जिसने जिन्ना के इशारे पर 1946 में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के चौदहवें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाया। पंजाब में जिन्ना के इशारे पर जमींदार पार्टी (यूनियनिस्ट पार्टी) की सर खिज्र हयात खां की सरकार को खत्म किया गया और सर फीरोज खां नून आदि ने लीग का वर्चस्व बढ़ाया। उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रान्त में खान अब्दुल गफ्फार खां के राष्ट्रवादी पठानों ने लीग की जड़ जमने नहीं दी; किन्तु अन्तत: यह प्रान्त भी 'कांग्रेस की कृपा से कट्टरपन्थियों से अपने को नहीं बचा सका। निश्चय ही दक्षिण भारत में मुस्लिम लीग ज्यादा ताकत नहीं पकड़ सकी; किन्तु केरल के मुस्लिम-बहुल क्षेत्रों में इब्राहीम इस्माइल चुन्द्रीगर (मूलत: जोधपुर का रंगरेज, जो ओढ़नियों (चुन्दरी) पर रंगाई का काम करता था।) बैरिस्टर बनकर लीग का नेता बन गया। लीग ने अपनी विचारधारा का प्रसाद प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में देशी रियासतों में करना आरम्भ कर दिया था। हैदराबाद, भोपाल, टोंक जैसी मुस्लिम रियासतों के शासक तो प्रत्यक्ष रूप से लीग का साथ देते थे। लेखक को अपने कालेज अध्ययन के दिनों का स्मरण है, जब उसका एक सहपाठी सैयद मोहम्मद अहमद, जो स्वयं को 'मारवाड़ मुस्लिम स्टुडेण्ट' का मंत्री कहता था, जोधपुर के हवाई अड्डे से कराची के लिए उड़ान भरने पहुंचे जिन्ना का स्वागत करने हेतु वायुपत्तन पर पहुंचा था।

दरअसल देश के बंटवारे के लिए लीग का प्रमुख तर्क था कि हिन्दू और मुसलमान मात्र दो अलग-अलग धर्म की नहीं हैं, ये दो पृथक् राष्ट्र हैं, जो अब तक अंग्रेजी शासन में यथा-तथा एक साथ रह रहे हैं। यदि पाकिस्तान नहीं बनाया जाता है, तो बहुमत वाले हिन्दू मुसलमानों का शोषण करते रहेंगे। इसके विपरीत कांग्रेस अपने को समस्त भारत का एकमात्र प्रतिनिधि कहकर पृथक् मुस्लिम राष्ट्र बनाने का विरोध कर रही थी। स्वयं को मुसलमानों का प्रतिनिधि कहलाने वाली कांग्रेस के साथ भी अब मुसलमानों का एक छोटा-सा तबका ही रह गया था। कांग्रेस के साथ रहे राष्ट्रवादी मुसलमानों को तो लीग वाले केवल 'शो व्वॉय' कहते थे और मौलाना आजाद, आसफ अली आदि का उपहास करने से नहीं चूकते थे।

पाकिस्तान की पृथकतावादी विचारधारा के उद्गम का इतिहास बताते हुए अजमेर के डॉ. सूर्यदेव शर्मा ने 1946 में प्रकाशित अपनी 'पाकिस्तान' शीर्षक पुस्तक में लिखा था कि सर्वप्रथम लन्दन में वकालत का अध्ययन करने वाले चौधरी रहमत अली नाम के एक विद्यार्थी ने एक लेख लिखकर भारत के कतिपय भागों को पृथक् कर स्वतन्त्र, प्रभुता, सम्पन्न मुस्लिम राष्ट्र की आवश्यकता बतायी थी। आगे चलकर पृथकतावाद की इस लहर ने राष्ट्रवादी कहलाने वाले तथा हिन्दोस्तां को सारे जहां से अच्छा बतलाने वाले अल्लामा इकबाल (डॉ. सर मोहम्मद इकबाल) को भी अपने प्रवाह में ले लिया, जब वे अपने गीत में आये 'हिन्दी हैं हम वतन हिन्दोस्तां हमारा' को बदल कर 'मुस्लिम हैं हम वतन है सारा जहां हमारा' का राग गाकर विश्व इस्लामवाद (Pan Islamism) के समर्थक बन बैठे। प्रसिद्ध वक्ता तथा सांसद रहे प्रकाशवीर शास्त्री की इकबाल के इस पाला बदलने पर टिप्पणी थी-'अल्लामा ठीक कहते हैं- ''हिन्दोस्तां' बेशक हमारा है और सारा जहां तो उन खानाबदोशों का होता है, जिनका कोई अपना घर नहीं होता है। ये लोग यों ही भटकते रहते हैं।'

सच्चाई यह है कि 1945 में द्वितीय महायुद्ध के समाप्त होते-होते संसार के विभिन्न देशों की स्थितियों में बदलाव आ गया था। मित्र राष्ट्रों में अमेरिका और रूस का प्रभाव बढ़ा था, जबकि ब्रिटिश शक्ति का ह्रास हुआ था। इस बीच नेताजी सुभाष बोस द्वारा गठित आजाद हिन्द फौज की गतिविधियों तथा मुम्बई में नौसैनिकों के विद्रोह ने ब्रिटिश सत्ता को यह आभास करा दिया था कि अब यह साम्राज्य अधिक दिनों टिकनेवाला नहीं है। इसलिए भारत के समक्ष उपस्थित राजनैतिक गुत्थी को सुलझाने के लिए पहले क्रिप्स मिशन और बाद में कैबिनेट मिशन (सर पैथिक लारेंस, स्टैफर्ड क्रिप्स तथा अलेक्लेण्डर) भारत भेजा गया। इधर विन्सेण्ट चर्चिल का ब्रिटिश प्रधानमंत्री का तख्त छिना और उदार दल के क्लीमेण्ट एटली प्रधानमंत्री बने, जिनका भारत के प्रति रुख सहानुभूतिपूर्ण था। इससे भी बढ़कर इस पेचीदा गुत्थी को सुलझाना तब जरूरी हो गया, जब 16 अगस्त, 1946 को जिन्ना के आह्वान पर मुसलमानों ने पाकिस्तान को प्राप्त करे के लिए सीधी कार्यवाही (Direct Action) के नाम कलकत्ता में निरपराध हिन्दुओं का खून बहाया और मुस्लिम दंगों की लपटों ने सारे देश को ग्रस लिया। अन्तत: 14 अगस्त 1947 को भारत का विभाजन हो गया और मुसलमानों का अलग देश पाकिस्तान अस्तित्व में आ गया। सवाल यह है कि क्या पाकिस्तान बन जाने से ही सारी समस्याओं का समाधान हो गया? धर्म के आधार पर राष्ट्र न बनते हैं और न ऐसे कृत्रिम राष्ट्रों का अस्तित्व स्थायी होता है, इस सत्य को हमने पाकिस्तान की तवारीख में ही सत्य होते हुए देखा है। मात्र धर्म के आधार पर पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान का गठन हुआ। इन दोनों क्षेत्रों में किसी प्रकार की समानता नहीं थी। भाषा, भाव, भूषा, खान-पान, व्यवहार में इस असमानता का परिणाम शीघ्र ही सामने आया, जब 1971 में पूर्वी पाकिस्तान ने बहुत कुछ बलिदान देकर पृथक, बांग्लादेश का रूप ले लिया। बंगला जैसी समृद्ध भाषा के रहते उर्दू को स्वीकार करना स्वाभिमानी बंगाली मुसलमानों का कब स्वीकार होता।

- शेष पृष्ठ 9 पर

चोटी के साथ नाक भी कट रही है

कई राज्यों में महिलाओं की चोटी कटने की घटना से सभी सकते में हैं। ऐसे में शासन से लेकर प्रशासन तक इसका सच जानने की कोशिश में, तो आमजन भयभीत सा नजर आ रहा है- किसी ने अपने घर के आगे गोबर व मेहँदी के थापे लगाने शुरू कर दिए तो कहीं पूरा गांव मंदिर और तांत्रिकों व झाड़फूंक वाले बाबाओं की गिरफ्त में आ रहा है। बचाव के लिए लोग तरह-तरह के धार्मिक प्रपंच कर रहे हैं। उत्तरी भारत के हरियाणा और राजस्थान की 50 से अधिक महिलाओं ने शिकायत की है कि किसी ने उन्हें बेहोश कर रहस्यमयी तरीके से उनके बाल काट लिए। इस रहस्य को सुलझाने में पुलिस अब तक नाकाम रही है जबकि इन राज्यों की महिलाएं इससे डरी हुई और चिंतित हैं।

खबर ही ऐसी है कि हर कोई सकते में आ जाये। रहस्य तब और गहरा जाता है जब यह पूछा जाता है कि किसी ने कथित हमलावर को देखा है क्या? शुरूआती घटनाओं में पीड़ित कहो या चोटी कटी महिलाएं किसी भी हमलावर की पहचान बताने में असफल रही किन्तु जैसे-जैसे घटनाओं के सिलसिले ने रफ्तार पकड़ी अब कोई बिल्ली जैसी दिखने वाली और कोई पीले कपड़ों में इंसानी आकृति की पहचान आगे रख उपरोक्त मामलों को सत्य घटनाओं की ओर मोड़ते दिख रहे हैं। दरअसल इस ''काल्पनिक नाई'' की पहली खबर जुलाई में राजस्थान से आई थी, लेकिन अब इस तरह की खबरें हरियाणा और यहां तक कि राजधानी दिल्ली से भी आने लगी हैं।

चोटी कटने की इन घटनाओं को लेकर अफवाह और व्यंग का बाजार गर्म है। मीडिया इसे सनसनी के तौर पर पेश कर अफवाहों की आग में पेट्रोल छिड़कने का कार्य सा करती दिख रही है। तमाम तरह के डरावने साउंड के साथ खबर को पानी पी-पीकर परोसा जा रहा है। घटना में पीड़ित एक महिला का कहना है कि चोटी कटने से पहले उसके सिर में तेज दर्द हुआ और वह बिस्तर पर बेसुध हो गई। होश आने पर उसने देखा कि उसकी चोटी कटी हुई है। सभी मामलों में पीड़ित महिलाएं या तो घर पर अकेली थी, कोई खेत में अकेली थी- कोई भी एक घटना ऐसी नहीं है कि जिसमें कथित पीड़िता के अलावा मौके पर कोई दूसरा गवाह रहा हो।

रेवाड़ी के जोनवासा गांव की 28 वर्षीय रीना देवी ने कहा कि उन पर गुरुवार को हमला हुआ और इस बार हमलावर एक बिल्ली थी। उन्होंने कहा, मैं अपना काम कर रही थी तभी मैंने एक बड़ी आकृति देखी, यह बिल्ली जैसी थी- तब मैंने महसूस किया कि किसी ने मेरे कंधे को छुआ और ये ही आखिरी बात मुझे याद है। वह मानती है कि उनकी कहानी पर विश्वास करना मुश्किल है। वह आगे कहती हैं, मैं जानती हूं कि ये असंभव सा लगता है- लेकिन मैंने यही देखा- कुछ लोग कहते हैं कि मैंने खुद अपने बाल काट लिए हैं। लेकिन मैं ऐसा क्यों करूंगी? लगभग सभी घटनाएँ इसी तरह की हैं किसी की चोटी बाथरूम में कटी मिली तो किसी की छत पर हर एक दावा इसी तर्क के सहारे सामने रखा जा रहा कि मैं ऐसा क्यों करूंगी?

राज्य दर राज्य घटनाओं में बढ़ोत्तरी हो रही है। प्रशासन का इन मामलों में यही कहना मिल रहा है कि ये विचित्र घटनाएं हैं। हमें वारदात की जगह पर कोई सुराग नहीं मिल रहे, हो सकता है इस अपराध में कोई संगठित गिरोह शामिल हो- हालाँकि कई लोगों का यह भी मानना है कि तांत्रिक या तथाकथित ओझा इन हमलों के पीछे हैं क्योंकि इस तरह के मामलों में लोग उनके पास इलाज के लिए पहुंचते हैं, जबकि कुछ लोग तो इसके पीछे अलौकिक शक्तियों का हाथ बताने में भी पीछे नहीं हट रहे हैं।

आर्य समाज से जुड़े होने के कारण कई लोगों ने इन घटनाओं पर मेरी राय जाननी चाही तो मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि 21वीं सदी जिसे आधुनिक सदी भी कहा जा रहा है लेकिन भारत में इस तरह की घटनाओं का होना शर्मनाक है। यहाँ झूठ और अफवाहों के पांव सरपट दौड़ते हैं। पिछले साल बाजार में नमक की कमी की अफवाह के कारण थोड़ी ही देर में नमक तीन सौ रुपये किलो तक बिक गया था। इसी प्रकार 2006 में हजारों लोग मुंबई के एक समुद्री तट पर यह सुन कर पहुंचने लगे थे कि वहां आश्चर्यजनक रूप से समुद्र का पानी मीठा हो गया है। साल 2001 में मंकी मैन काला बन्दर की जमकर अफवाह फैली थी। दिल्ली में सैकड़ों लोगों पर मंकी मैन ने कथित रूप से हमला किया। घायल लोग भी सामने आये लेकिन बाद में आई रिपोर्ट के मुताबिक यह जन भ्रामक मामला साबित हुआ।

इसी तरह 90 के मध्य में दुनिया भर के लाखों लोगों के बीच यह खबर फैली हुई थी कि भगवान की एक मूर्ति दूध पी रही है। 1995 में भगवान गणेश की मूर्ति के चम्मच से दूध पीने की खबर समूचे देश में फैल गई थी। हालाँकि मनो चिकित्सक इसे ''मासहिस्टीरिया'' या ''जन भ्रम का रोग'' मानते हैं। इन घटनाओं में पीड़ित होने वाली महिला निश्चित तौर पर किसी आंतरिक मनोवैज्ञानिक द्वंद से जूझ रही होगी। जब वह इस तरह की घटनाओं के बारे में सुनती हैं तो खुद पर ऐसा होते हुए सा अहसास करती हैं, ऐसा कभी-कभी अवचेतनावस्था में भी होता है। समाज के जिम्मेदार लोगों को ऐसे मामलों की तह तक जाना चाहिए। लोगों से अफवाहों में यकीन नहीं करने की अपील करनी चाहिए क्योंकि इन अफवाहों से देश की आधुनिक शिक्षा, ज्ञान, धर्म व सामाजिक समझदारी पर भी सवाल उठकर चोटी के साथ देश की नाक भी कटती है।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग — वे स्वाधीनता तथा अखण्डता के लिए आहुत हो गए

देश के स्वतन्त्र होते ही हैदराबाद के जनूनी मुसलमान निज़ाम को एक स्वतन्त्र मुस्लिम राज्य बनाने के लिए षड्यन्त्र रचकर वहाँ के हिन्दुओं के दमन तथा दलन में जुट गये। निज़ाम राज्य के बहुसंख्य हिन्दू भारत से विलय के इच्छुक थे, परन्तु मुसलमानों में देशभक्ति के भाव का अभाव था। आर्यवीरों ने शीश तली पर धरकर राज्य की स्वाधीनता तथा भारत के साथ विलय के लिए संघर्ष छेड़ा। बहुत कष्ट सहे और बड़े बलिदान दिये।

महाराष्ट्र के धाराशिव जिला (यह भी तब निजाम राज्य में था) के अन्तर्गत एक ईटे गाँव है। उस ग्राम में एक आर्यवीर था। उसका नाम कृष्णराव ईटेकर था। वह भी इस मुक्ति आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेता था। उसकी पत्नी श्रीमती गोदावरी भी एक वीरांगना थी। उनके घर पर ओ३म् ध्वज फहराता था। निजामी शासन तथा उसके मुसलमान पोषक ईश्वर के 'ओ३म्' नाम का ध्वज न सह सकते थे। उन्हें यह झण्डा बहुत अखरता था।

एक दिन कुछ मुसलमान अधिकारी तथा अन्य बदमाश कृष्णराव के घर आये और झण्डा उतारने के लिए कहा। वीर कृष्णराव ने उनको यथोचित उत्तर दे दिया। झण्डा नहीं उतारा। अन्यायी निज़ामी अधिकारियों तथा उनके सहायक मुसलमानों ने उस पर गोली चला दी। घायल कृष्णरावजी की साहसी पत्नी ने पति की बंदूक सँभाली। वह भी शस्त्र चलाना जानती थी। वह उन पर बिजली बनकर टूट पड़ी। उसकी बंदूक का सामना वे कायर-क्रूर आक्रमणकारी न कर सके। हताश-निराश दुष्टों ने कृष्णरावजी के घर को आग लगा दी।

कृष्णराव ईटेकर को देश की स्वाधीनता तथा अखण्डता के लिए घायल अवस्था में जीवित जलाया गया। उसकी शूर पत्नी भी उसी जलते हुए अपने घर में अपने प्राणप्रिय पतिदेव के साथ अपनी मातृभूमि के लिए, राज्य की मुक्ति के लिए जीवित जला दी गई। देश के लिए बहुत जन आहुत हुए, परन्तु हमारी स्वाधीनता की लड़ाई में केवल चार व्यक्ति जीवित जलाये गये। वे चारों निजाम राज्य के थे। चारों ही आर्यसमाजी थे। रक्तसाक्षी कृष्णराव तथा उनकी रक्तसाक्षी देवी गोदावरी से आनेवाली पीढ़ियाँ प्रेरणा पाकर देश की रक्षा तथा कल्याण के लिए अपना दायित्व निभाएँगी, ऐसी आशा करना चाहिए।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

'साधक की साधना' स्मारिका का विमोचन

कोटा एवं आसपास के क्षेत्र में समाज के विकास में श्रीकृष्ण साधक का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। उनके किये गये कार्यों का ही परिणाम है कि आज आर्य समाज कोटा अपने कार्यों से प्रगति के पथ पर सतत आगे बढ़ रहा है। उक्त विचार एमडीएच चैयरमेन महाशय धर्मपालजी ने कोटा के सुप्रसिद्ध आर्य व्यक्तित्व विचार श्रीकृष्ण साधक के जीवन पर प्रकाशित स्मारिका के विमोचन के अवसर पर अपने संदेश में व्यक्त किये।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा द्वारा प्रकाशित स्मारिका 'साधक की साधना' के नई दिल्ली में विमोचन के इस अवसर पर महाशय जी ने कहा कि श्रीकृष्ण साधक का व्यक्तित्व अत्यन्त मिलनसार रहा है। सच्चे अर्थों में वे आर्यपुत्र हैं।

स्मारिका के प्रकाशक जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने उद्बाधन में कहा कि 'श्रीकृष्ण एक कुशल संगठनकर्ता थे। उन्होंने हाड़ौती अंचल की विभिन्न आर्य समाजों को एक साथ मिलकर हाड़ौती क्षेत्रीय आर्य उपप्रतिनिधि सभा कोटा का गठन किया।'

- अर्जुनदेव चड्ढा, प्रधान

प्रथम पृष्ठ का शेष

ब्रह्मदेश में वेद की ज्योति और बढ़ने : आओ चलें म्यामांर

मांडले में ब्रिटिश शासनकाल में यहां किलानुमा जेल थी जहाँ भारत माता के वीर सपूतों लाला लाजपत राय और बाल गंगाधर तिलक, नेताजी सुभाषचंद्र बोस को बंदी बनाकर रखा गया था। किले के अवशेष आज भी भारतीय क्रांति की स्मृति ताजा कर देते हैं। प्रसिद्ध आर्य समाजी लाजपत राय समेत कई क्रन्तिकारी यहाँ एकांतवास में रखे गये थे। अकेले और असुविधाओं के बीच, सिर्फ इसलिए कि आर्य समाज भारत देश से गुलामी की बेड़ियाँ काटकर फेंक देने पर अडिग था जिसे अंग्रेजी हकुमत नहीं चाहती थी।

हालाँकि बर्मा की गलियों में आर्य समाज के नाम का डंका बज चुका था। क्योंकि आर्य समाज की स्थापना के बाद बर्मा के इसी मांडले शहर में वैदिक धर्म के अनुयायियों महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्तों का आगमन लगभग सन् 1897 में हो गया था। भौगोलिक इतिहास में कभी भारत से जुड़े इस देश में महर्षि दयानन्द, पंडित लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द समेत अन्य समकालीन महात्माओं, संतो के वैदिक उपदेश जब यहाँ के लोगों के कानों में गूंजे तो शीघ्र ही बर्मा के प्रसिद्ध नगर रंगून(यंगून) और मांडले में आर्य समाज मंदिर बन गये। यह सब कार्य वैदिक धर्म प्रेमी लोग बड़े उत्साह और लग्न से करने लगे। वैदिक ध्वज एक बार फिर ब्रह्मदेश की धरती पर लहरा उठा।

धीरे-धीरे वर्ष बढ़ते गये अगली सदी के सूर्य उदय के साथ आर्य समाज दिन-दूनी रात-चौगनी प्रगति करने लगा। आर्य समाज की गतिविधियां विद्यालय, अनाथालय, सत्संग संचालित होने लगे प्रत्येक बड़े शहर में जैसे रंगून, माण्डले, लाशियो, मिचिना, मोगोग, जियावाड़ी में स्थापित अनाथालय, स्कूल व सामाजिक संस्थाओं के कार्यो समेत स्त्री समाज की शिक्षा के प्रोत्साहन को लेकर तथा अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आर्य समाज के कार्यो ने लोगों का मन जीत लिया था। लोग अपने साधारण भवनों के साथ जमीन और पैसे समाज के कार्यो के लिए दान स्वरूप भेंट करने लगे।

लेकिन जल्दी ही नई सदी के इस सूर्य को दूसरे विश्व युद्ध का ग्रहण लग गया जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बर्मा में पैदा हुए भारत विरोधी रुझान का शिकार बन गया था। उस समय रंगून (अब यांगून) में आधी आबादी भारतीयों की थी। वे ब्रिटिश प्रशासन में महत्त्वपूर्ण पदों पर थे और इसीलिए बर्मा के नागरिकों के निशाने पर थे। उन्हें नस्लभेदी हमलों का सामना भी करना पड़ा। सन् 1962 में भारतीयों को बर्मा से निकाला जाने लगा और उनकी निजी और धार्मिक सम्पतियों का राष्ट्रीयकरण किया जाने लगा था। उस समय भारतीय मूल के लगभग तीन लाख लोगों को बर्मा से पलायन करना पड़ा था।

बर्मा में सैनिक शासन के प्रारम्भ के साथ वैदिक साहित्य आदि पर रोक लगा दी गयी। बौद्ध धर्मी बहुसंख्यक इस प्रदेश में नवीन साहित्य के प्रकाशन, बिक्री आदि पर रोक लगा दी गयी। एक किस्म से आर्य समाज के उत्साहित विद्वानों के उत्साह आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं के कार्यो पर चोट जैसा था। लेकिन इसके बावजूद भी हमारा प्रणाम और नमन उन आर्य कार्यकर्ताओं को जिन्होंने फटे, पुराने आर्ष ग्रन्थों से ही वेद की ज्योति के दीपक को बुझने से बचाए रखा। यदि आज वर्तमान में बर्मा के अन्दर आर्य समाज की बात की जाये तो शहरी क्षेत्रों की आर्य समाज मंदिर बेहद भव्य तो ग्रामीण क्षेत्रों की आर्य समाजें वैदिक ज्ञान की लोलुपता के कारण खस्ताहाल हैं। आज आर्य महासम्मेलन जैसे गौरवान्वित कार्य को करने में सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में एक बार फिर लगभग120 साल बाद दयानन्द के सिपाही मांडले में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित कर ब्रह्मदेश (म्यांमार) में वैदिक ज्योति को पुन: उसी वेग से जागृत करने का कार्य करेंगे।

आर्य महासम्मेलन म्यांमार की तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही हैं। आप भी अपनी उपस्थिति इस महासम्मेलन में दर्ज कराने के लिए जल्द से जल्द अपनी टिकट बुक करा लें कहीं ऐसा न हो कि आप इस महासम्मेलन में अपनी आहुति देने की सोचते ही रह जाएं। यात्रा सम्बन्धी विवरण एवं आवेदन पत्र इसी पृष्ठ पर एवं पृष्ठ 6 पर दिया गया है। आप इसे आर्यसमाज की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड भी कर सकते हैं। आवेदन पत्र की फोटोप्रति मान्य हैं। विस्तृत जानकारी के लिए श्री एस. पी. सिंह जी (मो. 09540040324) से सम्पर्क करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2017 के बारे में महत्वपूर्ण सूचना

एअरलाइन्स में सीटें न मिलने के कारण यात्रा नं.1 तथा यात्रा नं.2 दोनों में दिल्ली तथा कोलकता से प्रस्थान करने की तथा वापस आने की तारीखों में परिवर्तन करना पड़ा है। यात्रीगण कृपया अच्छी तरह नोट कर लें कि......

1. **यात्रा नं. 1 के सभी यात्रियों को दिल्ली से 3 अक्टूबर 2017 की रात्रि को 11:00 बजे रंगून के लिये प्रस्थान करना है और 10 अक्टूबर की रात्रि को 10:00 बजे वापस आना है।**
2. **यात्रा नं. 1 के कोलकता से जाने वाले सभी यात्री 4 अक्टूबर 2017 को कोलकता से सुबह 8:15 पर ढाका होते हुए रंगून जायेंगे और 11 अक्टूबर की रात को 8:00 बजे कोलकता वापस पहुँचेंगे।**
3. **मलेशिया टूर पर जाने वाले यात्रा नं. 2 के यात्री भी 3 अक्टूबर की रात्रि को दिल्ली से 11 बजे प्रस्थान करेंगे तथा 12 अक्टूबर की रात्रि को 10 बजे दिल्ली वापस पहुँचेंगे।**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार (बर्मा) 2017

दिनांक 06, 07 तथा 08 अक्टूबर 2017

30 जुलाई 2017

सम्माननीय आर्यबन्धुओ !

सादर नमस्ते। आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 06, 07 तथा 08 अक्टूबर 2017 को म्यांमार (बर्मा) के माण्डले शहर में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि भी बर्मा पहुँचेंगे। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु काफी आर्यजनों के पहुँचने की सम्भावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही आर्य प्रतिनिधि सभा, बर्मा द्वारा प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था की जायेगी।

माण्डले में ब्रिटिश शासनकाल में यहाँ किलानुमा जेल थी जहाँ भारत माता के अनेक वीर सपूतों को बंदी बनाकर रखा गया था। किले के अवशेष आज भी भारतीय क्रांति की स्मृति ताजा कर देते हैं। प्रसिद्ध आर्य समाजी लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचन्द्र बोस समेत कई क्रान्तिकारी यहाँ एकांतवास में रखे गये थे। अकेले और असुविधाओं के बीच, सिर्फ इसलिए कि आर्य समाज भारत देश से गुलामी की बेड़ियाँ काटकर फेंक देने पर अडिग था जिसे अंग्रेजी हकुमत नहीं चाहती थी।

माण्डले का मौसम लगभग भारत जैसा ही है। सर्दियों में कड़ी सर्दी, गर्मियों में आकाश से लेकर धरती तक भट्टी की तरह तपाती गरमी तो बरसात में भारी वर्षा भी यहाँ होती है। मंदिरों, प्राकृतिक सुषमा और सौन्दर्य से भरपूर यह शहर अपनी अनेक विशेषताओं के कारण भी जाना जाता है। यहाँ दुनिया की सबसे बड़ी पुस्तक के रूप में एक मंदिर विद्यमान है यानी कि किताब के हर पृष्ठ के रूप में एक मंदिर बना है जिनकी संख्या करीब 500 से ज्यादा है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि ब्रह्मदेश यानी बर्मा में 120 वर्ष के लम्बे अंतराल के पश्चात् यह आर्य महासम्मेलन आयोजित होने जा रहा है। अनेकों आर्यजन इस अवसर पर बर्मा के अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों का भी भ्रमण करना चाहते हैं इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए बर्मा के कुछ रमणीय एवं महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है। यात्रा की जानकारी निम्न प्रकार है —

म्यांमार (बर्मा) यात्रा नं.1

3 अक्टूबर से 10 अक्टूबर 2017

दिल्ली से (7 रात्रि 8 दिन) **कोलकता से (8 रात्रि 9 दिन)**

कार्यक्रम

03.10.2017	दिल्ली से जाने वाले यात्री रात्रि को 11 बजे हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान करेंगे और 4 अक्टूबर की सुबह 7 बजे क्वालालम्पुर पहुँचेंगे।
04.10.2017	दिल्ली वाले यात्री क्वालालम्पुर से 9:15 AM की फ्लाइट से रंगून जायेंगे और रंगून से दोपहर 1:30 PM की फ्लाइट से 2:50 PM पर इनले लेक पहुँचेंगे। रात्रि विश्राम इनले लेक होटल में करेंगे। कोलकता से जाने वाले यात्री 4 अक्टूबर को सुबह 8:15 पर कोलकता से प्रस्थान करके 9:45 AM पर ढाका पहुँचेंगे और ढाका से 12:45 PM की उड़ान से 3:30 PM पर रंगून पहुँचेंगे। रंगून से लगभग 5:30 PM की उड़ान से लगभग 7:00PM पर इनले लेक पहुँचेंगे।
05.10.2017	इस दिन दिल्ली से तथा कोलकता से आने वाले सभी यात्री सुबह 6 बजे से इनले लेक के सभी स्थलों का भ्रमण करेंगे। दोपहर बाद लक्जरी कोचों से माण्डले के लिये प्रस्थान करेंगे। रात्रि विश्राम मांडले में। **(पानी के अन्दर बसे हुए शहर को देखने के लिये इनले लेक पूरे विश्व में विख्यात है)**
06.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) सुबह से शाम तक
07.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) सुबह से शाम तक
08.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) दोपहर 1 बजे तक भोजन के पश्चात् अपरान्ह 3 बजे से मांडले तथा आसपास के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करके रात्रि विश्राम मांडले में
09.10.2017	सुबह 5 बजे लक्जरी कोचों द्वारा रंगून के लिये प्रस्थान। दोपहर से रात्रि तक रंगून भ्रमण तथा रात्रि विश्राम रंगून में
10.10.2017	दिल्ली के यात्री रंगून से सुबह 11.20 की उड़ान से क्वालालम्पुर होते हुए रात्रि 10 बजे दिल्ली पहुँचेंगे।
11.10.2017	कोलकता वाले यात्री रंगून से शाम 4:15 बजे ढाका होते हुए रात को 8 बजे कोलकता पहुँचेंगे।

यात्रा व्यय

दिल्ली से जाने वाले यात्रियों केलिये	₹ 78500/- प्रति व्यक्ति
कोलकता से जाने वाले यात्रियों के लिये	₹ 65500/- प्रति व्यक्ति

इस राशि में सभी हवाई यात्राओं का किराया, 6/7 रात्रि का 4 स्टार होटलों का भाड़ा, लक्जरी कोच का भाड़ा, रंगून, इनले लेक तथा मांडले का भ्रमण व्यय, भोजन व्यय, बीमा तथा वीजा आदि शामिल हैं।

उक्त यात्रा हेतु दिल्ली से केवल 75 सीटों का आरक्षण करवाया गया है तथा कोलकता से केवल 25 सीटों का आरक्षण करवाया गया है। कृपया ध्यान रखें कि इन सीटों की पूर्ति होने के पश्चात् उक्त यात्रा-दर में वृद्धि हो सकती है इसलिये शीघ्र से शीघ्र अपनी सीट बुक करालें।

नोट: (1) यात्रा व्यय की सम्पूर्ण राशि एक ही बार में THOMAS COOK(I)Ltd. के नाम बैंक ड्राफ्ट (Payable at Ahmedabad) द्वारा निम्न पते पर तत्काल भेजनी होगी:

श्री प्रकाशजी आर्य, मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

(2) बैंक ड्राफ्ट के अतिरिक्त आपको निम्नलिखित सामान भी साथ में दिल्ली भेजना है :
(A) स्वयं का पासपोर्ट जिसकी वैधता (Validity)05.04.2018 तक हो (B)Visa Application Form की 3 प्रति (तीनों पर अलग-अलग हस्ताक्षर करके) (C) चार कलर फोटोग्राफ 35X45mm साइज के (वाइट बैक ग्राउन्ड के साथ) (D) दो कोरे लैटर हैड (स्टाम्प व हस्ताक्षर सहित) (E) यदि आप स्वयं रोजगार करते हैं तो कम्पनी के रजिस्ट्रेशन की जैरोक्स कापी तथा पार्टनरशीप डीड की जैरोक्स कापी भेजनी है, यदि आपकी कम्पनी प्रा. लि. है तो Memorandum of Article की जैरोक्स कापी भेजनी है।

म्यांमार (बर्मा) यात्रा नं.2

(केवल दिल्ली से जाने वाले यात्रियों के लिये)

03 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 2017

(9 रात्रि 10 दिन)

कार्यक्रम

03.10.2017	दिल्ली से रात्रि को 11:00 बजे हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान और 4 अक्टूबर की सुबह 7:00 बजे क्वालालम्पुर आगमन।
04.10.2017	क्वालालम्पुर से 9:15 AM की फ्लाइट से रंगून और रंगून से दोपहर 1:30 PM की फ्लाइट से 2:50 PM पर इनले लेक पहुँचेंगे। रात्रि विश्राम इनले लेक होटल में करेंगे।
05.10.2017	सभी यात्री सुबह 6 बजे से इनले लेक के सभी स्थलों का भ्रमण करेंगे। दोपहर बाद लक्जरी कोचों से माण्डले के लिये प्रस्थान करेंगे। रात्रि विश्राम मांडले में।
	(पानी के अन्दर बसे हुए शहर को देखने के लिये इनले लेक पूरे विश्व में विख्यात है)
06.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) सुबह से शाम तक
07.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) सुबह से शाम तक
08.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) दोपहर 1:00 बजे तक भोजन के पश्चात् अपरान्ह 3 बजे से मांडले तथा आसपास के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करके रात्रि विश्राम मांडले में
09.10.2017	सुबह 5 बजे लक्जरी कोचों द्वारा रंगून के लिये प्रस्थान। दोपहर से रात्रि तक रंगून भ्रमण तथा रात्रि विश्राम रंगून में
10.10.2017	रंगून से सुबह 11.20 की उड़ान से अपरान्ह 15:40 पर क्वालालम्पुर पहुँचेंगे। शाम को **Twin Tower** देखेंगे तथा रात्रि विश्राम क्वालालम्पुर में।
11.10.2017	पूरे दिन क्वालालम्पुर के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण, रात्रि विश्राम क्वालालम्पुर में
12.10.2017	सिटी टूर एवं शापिंग तथा शाम को 18:50 पर दिल्ली के लिये प्रस्थान। दिल्ली आगमन रात्रि 10 बजे।

यात्रा व्यय

₹ 99500/- प्रति व्यक्ति

इस राशि में सभी हवाई यात्राओं का किराया, 8 रात्रि का 4 स्टार होटलों का भाड़ा, लक्जरी कोच का भाड़ा, क्वालालम्पुर, रंगून, इनले लेक तथा मांडले का भ्रमण व्यय, भोजन व्यय, बीमा तथा दोनों देशों के वीजा आदि शामिल हैं।

(1) उक्त यात्रा दर केवल प्रथम 25 यात्रियों के लिये है। उसके पश्चात् यात्रा दर में वृद्धि हो सकती है। इसलिये शीघ्रातिशीघ्र अपनी सीट बुक करालें। यात्रा व्यय की सम्पूर्ण राशि एक ही बार में **THOMAS COOK(I)Ltd.** के नाम बैंक ड्राफ्ट (Payable at Ahmedabad) द्वारा निम्न पते पर तत्काल भेजनी होगी:
श्री प्रकाशजी आर्य, मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

(2) बैंक ड्राफ्ट के अतिरिक्त आपको निम्नलिखित सामान भी साथ में दिल्ली भेजना है :
(A)स्वयं का पासपोर्ट जिसकी वैधता (Validity) 05.04.2018 तक हो (B) 35X50mm साइज के चार कलर फोटोग्राफ (वाइट बैक ग्राउन्ड के साथ) (C) मलेशिया के लिये **Visa Application Form** की आवश्यकता नहीं है।

कुछ आवश्यक सूचनाएँ

(1) **आर्य-सन्देश में प्रकाशित यात्रा विवरण के आधार पर जो यात्री ₹15000/- की राशि भेज चुके हैं वे शेष राशि Thomas Cook (I)Ltd. के नाम ड्राफ्ट बनवाकर दिल्ली के पते पर भेजने का कष्ट करें।**

(2) यात्रा नं. 1 के लिये दिल्ली से केवल 75 सीटें बुक कराई गई हैं और कोलकता से केवल 25 सीटें ही बुक करवाई गई हैं। इन सीटों के आरक्षित हो जाने के बाद, इस यात्रा में शामिल होने वाले यात्रियों को अधिक यात्रा-व्यय देना पड़ सकता है। अत: शीघ्रातिशीघ्र अपनी सीट बुक कराने का प्रयास करें।

(3) यात्रा-व्यय में 70 वर्ष तक की आयु के यात्रियों का बीमा शुल्क शामिल है। 70 वर्ष से अधिक उम्र वाले यात्रियों को अतिरिक्त बीमा-राशि देनी होगी। ऐसे यात्री स्वयं भी अपना बीमा करा सकते हैं।

(4) सभी यात्रियों को यात्रा की व्यय-राशि के ड्राफ्ट के साथ अपना पासपोर्ट, चार कलर फोटो बर्मा के लिये तथा चार कलर फोटो मलेशिया के वीजा हेतु, वीजा फार्म तथा दो कोरे लैटरहैड भी भेजने हैं जिनका विवरण पृष्ठ 2 पर दिया गया है।

(5) संलग्न आवेदन पत्र पर सम्बन्धित आर्यसमाज के पदाधिकारियों की अनुमति/स्वीकृति आवश्यक है।

(6) सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 4 सदस्यों की एक समिति गठित की गई है जिसके संयोजक श्री प्रकाश आर्य, मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। अन्य सदस्य (1) श्री एस. पी. सिंह, दिल्ली (2) श्री अरुणजी वर्मा, दिल्ली तथा (3) श्री शिवकुमारजी मदान दिल्ली हैं। श्री एस.पी. सिंह इस यात्रा के मुख्य सम्पर्क सूत्र रहेंगे। इन सभी के मोबाइल नम्बर नीचे दिये गये हैं।

(7) सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को यात्रा के कार्यक्रम में परिस्थिति अनुसार फेरफार करने का पूर्ण अधिकार होगा।

(8) **याद रहे कि इस यात्रा के लिये आपके पासपोर्ट की वैधता (Validity) 05/04/2018 तक होनी आवश्यक है।**

(9) इमीग्रेशन में दिखाने हेतु अपना क्रेडिट कार्ड या डेबिट कार्ड साथ में अवश्य रख लें

(10) अपने साथ न्यूनतम 500 US डालर प्रति यात्री अवश्य ले चलें।

यात्रा कैन्सिल कराये जाने पर कैन्सीलेशन चार्जेज निम्न प्रकार लागू होंगे:

20 अगस्त 2017 के बाद यात्रा कैन्सिल कराने पर 50% कटौती की जायेगी। (2) 5 सितम्बर 2017 के बाद यात्रा कैन्सिल करने पर 100% कटौती की जायेगी। (3) यात्रा प्रस्थान की तारीख से 25 दिन पूर्व वीजा न मिलने पर ₹12000/- की कटौती होगी, 15 दिन पूर्व वीजा न मिलने पर 50% कटौती होगी तथा 1 सप्ताह पूर्व वीजा न मिलने पर 75% कटौती होगी।

कृपया उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु आप मुझसे तथा निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं :

1. **श्री एस.पी.सिंह मो. 9540040324** (यात्रीगण सर्वप्रथम इनसे ही सम्पर्क करें)
2. **श्री अरुण वर्मा मो. 98100 86759** (श्री एस.पी.सिंह से सम्पर्क न होने पर ही इनसे सम्पर्क करें)
3. **श्री शिवकुमार मदान मो. 9310474979** (श्री एस.पी.सिंह से सम्पर्क न होने पर ही इनसे सम्पर्क करें)

आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त 2017

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद, आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

भवदीय

(प्रकाश आर्य)
मो. 09826655117

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2017 हेतु आवेदन - पत्र

श्री प्रकाश जी आर्य
मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड
नई दिल्ली - 110001

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2017 में भाग लेने जाना चाहता हूँ/चाहती हूँ। इस संबंध में आपके द्वारा प्रेषित जानकारी को मैंने अच्छी तरह पढ़ लिया है तथा उसमें दी गई सभी बातें मुझे स्वीकार हैं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है :

नाम:________________ पिता/पति का नाम:________________

आयु:______ जन्म दिनांक : ____________ व्यवसाय :________________

स्थाई पता : ________________________________

____

टेलीफोन व मोबाईल नम्बर : ________________ ई.मेल :________________

मैं आर्यसमाज________________________________का/की सदस्य हूँ।

यात्रा नं. -1 दिल्ली से

मैं यात्रा नं. 1 में दिल्ली से शामिल होना चाहता/चाहती हूँ। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि ₹ ____________/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूँ/रही हूँ। साथ में अपना पासपोर्ट, 4 कलर फोटोग्राफ, वीजा फार्म तथा 2 कोरे लैटरहैड भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. -1 कोलकता से

मैं यात्रा नं. 1 में कोलकता से शामिल होना चाहता/चाहती हूँ। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि ₹ ____________/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूँ/रही हूँ। साथ में अपना पासपोर्ट, 4 कलर फोटोग्राफ, वीजा फार्म तथा 2 कोरे लैटरहैड भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. -2 केवल दिल्ली से

मैं यात्रा नं. 2 में शामिल होना चाहता/चाहती हूँ। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि ₹ ____________/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूँ/रही हूँ। साथ में अपना पासपोर्ट, चार कलर फोटोग्राफ (35X45mm) बर्मा के लिये, 4 कलर फोटोग्राफ (35X50mm) मलेशिया के लिये, बर्मा का वीजा फोर्म तथा दो कोरो लैटरहैड भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

आर्यसमाज की अनुमति (रबर स्टाम्प के साथ)

भवदीय/भवदीया

(आवेदक के हस्ताक्षर)

दिनांक : ____________

GOVERNMENT OF THE REPUBLIC OF THE UNION OF MYANMAR
MINISTRY OF IMMIGRATION AND POPULATION

DIRECTORATE OF IMMIGRATION AND NATIONAL REGISTRATION
IMMIGRATION DEPARTMENT
APPLICATION FOR ENTRY TOURIST VISA

PHOTO

1. Name in full (In Block Letters) ________________
2. Father's Name in full ________________
3. Nationality ________________ 4. Sex ________________
5. Date of birth ________________ 6. Place of birth ________________
7. Occupation ________________
8. Personal description
   (a) Color of hair ________________ (b) Height ________________
   (c) Color of eyes ________________ (d) Complexion ________________
9. Passport
   (a) Number ________________ (b) Date of issue ________________
   (c) Place of issue ________________ (d) Issuing authority ________________
   (e) Date of expiry ________________
10. Permanent address ________________
11. Address in Myanmar ________________
12. Purpose of entry into Myanmar ________________
13. Attention for Applicants
    (a) Applicant shall abide by the Laws of the Republic of the Union of Myanmar and shall not interfere in the internal affairs of the Republic of the Union of Myanmar.
    (b) Legal actions will be taken against those who violate or contravene any provision of the existing laws, rules and regulations of the Republic of the Union of Myanmar.

I hereby declare that I fully understand the above mentioned conditions, that the particulars given above are true and correct and that I will not engage in any activities irrelevant to the purpose of entry stated herein.

Date ____________ **Signature of Applicant**

(FOR OFFICIAL USE ONLY)

Visa No ________________ Date ________________
Visa Authority ________________

Date ________________
Place New Delhi, Republic of India

Embassy of the Republic of the Union of Myanmar, New Delhi

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत

यज्ञ विधि - प्रक्रिया - एकरूपता- विशेषताओं तथा यज्ञ विज्ञान का सामान्य ज्ञान प्रदान करने हेतु

पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्यसमाज नजफगढ़ में शिविर

यज्ञ से कीटाणु मरते हैं तथा वातावरण व मन शुद्ध होगा, जिससे हमारे शत्रु भी कम होंगे *-बालक प्रथम जैन, प्रशिक्षणार्थी*

बहुत सुन्दर यज्ञ करनेकी विधि का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ तथा इन दिनों सारा दिन मन में अच्छे भाव व विचार रहे। *- साक्षी रावत, बी. कॉम छात्रा*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में संचालित घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में श्रृंखलाबद्ध आयोजित पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज नजफगढ़, नई दिल्ली में दिनांक 11 से 13 अगस्त 2017 के मध्य आयोजित किया गया। शिविर में लगभग 50-60 व्यक्तियों ने यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया इस शिविर में आर्य सदस्यों के साथ-साथ बहुत सारे पौराणिक बन्धुओं ने बड़ी जिज्ञासा पूर्वक यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संयोजक के विचार से इन शिविरों में आये हुए बहुत सारे सदस्य हैरान रहते हैं कि इतनी सरलता व शुद्धता के साथ यदि यज्ञ हो सकता है तो हर मानव को इसका प्रयास करना चाहिए। इसमें न कोई छल-कपट की गुंजाइश है और न किसी दिखावे या आडम्बर की आवश्यकता पड़ती है। यज्ञ से वायु मण्डल में जो शुद्धता आएगी वह न केवल मानव जाति के लिए बल्कि हर जीव के लिए लाभकारी है। यज्ञ विषय पर कक्षा पांच के प्रशिक्षणार्थी प्रथम जैन बोलते हुए कहा कि यज्ञ करने से कीटाणु मरते हैं तथा वातावरण व मन शुद्ध होता है जिससे हमारे शत्रु भी कम होंगे।' श्री जगदीश मलिक जी ने कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना संचालित करके मानव जाति के लिए बहुत बड़ा पुण्य का कार्य कर रही है जिससे प्राणि मात्र तो लाभान्वित होंगे ही साथ ही भारत में पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में बहुत बड़ा योगदान मिलेगा। यज्ञ से होने वाले लाभों की जानकारी सिर्फ आर्य समाजियों तक ही सीमित न रखते हुए समस्त मानव जाति में इसका प्रचार-प्रसार करना होगा।

शिविर को सफल बनाने में आर्य समाज नजफगढ की पूरी कार्यकारिणी व सदस्यों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आर्यसमाज के प्रधान श्री जगदीश मलिक डॉ. बी.डी. लाम्बा मंत्री, श्री सतबीर आर्य पूर्व प्रधान, ब्रह्मा आचार्य सत्य प्रकाश ने पूरा योगदान दिया तथा शिविर को सफल बनाने व प्रचार में बहुत समय देकर इसे सफल बनाया। यज्ञ सम्बन्धी वैज्ञानिक जानकारी सविस्तार समझाने में सभा महामंत्री श्री विनय आर्य तथा पावर पॉइन्ट का प्रदर्शन करने में का योगदान रहा।

-सतीश चढ्ढा, संयोजक

★ अपनी आर्यसमाज में पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर लगवाने हेतु श्री सतीश चड्ढा जी, संयोजक (9540041414) से सम्पर्क करें।
★ एक साथ 100 लोगों के प्रशिक्षण की व्यवस्था। ★ न्यूनतम डेढ़ घंटे के चार सत्र अथवा दो घंटे दो के सत्र का कार्यक्रम। - महामन्त्री

आर्य जनों के लिए विशेष सूचना

''सहयोग'' के लिए चाहिए आपका सहयोग

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं यही सोच कर हमने यह विचार किया और महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना का शुभारम्भ किया गया ।

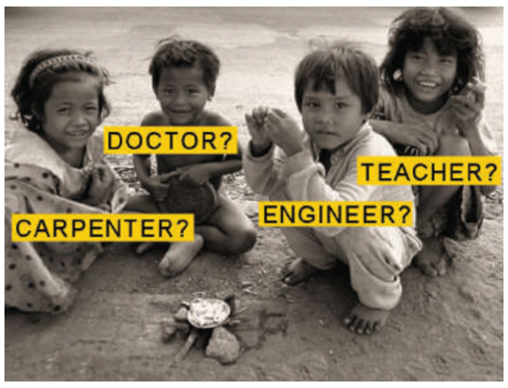

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

निवेदक
धर्मपाल आर्य, प्रधान — विनय आर्य, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
महाशय धर्मपाल, प्रधान — जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

विशेष निवेदन : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यह योजना अभी केवल दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों मे लागू की गई है। आप भी अपने क्षेत्रों में अपनी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्पर्क करके सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत इस योजना को आरम्भ कर सकते हैं। *- महामन्त्री*

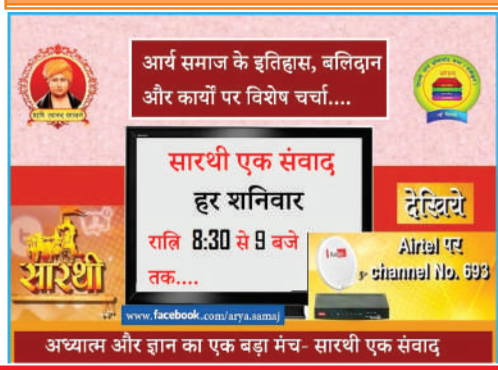

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

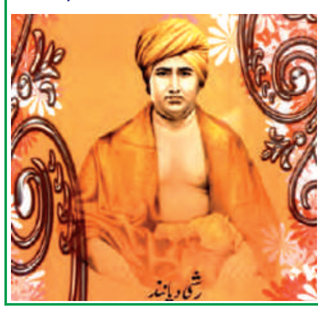

सत्यार्थ प्रकाश
उर्दू भाषा में अनुवाद)
मूल्य : 100/- रुपये
श्री बलदेव राज महाजन जी
आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)
के विशेष सहयोग से
केवल मात्र 70/- में

Veda Prarthana

Dear God, Help Us Destroy the Enemies of the Society

- Acharya Gyaneshwarya

अकर्मा दस्युरभि नो मन्तुरन्यव्रतो अमानुषः।
त्वं तस्याऽमित्रहन् वधर्दासस्य दम्भय।।

Akarma dasyurabhi no mantuh anyavrato amanushah. Tvam tasya amitrahan vadhah dasasya dambhaya.

(Rig. Veda 10:22:8)

Akarma a lazy person, one who does not put effort but wants rewards, dasyu abhi is like a thief or robber and is destructive for no us and the society, amantuh so is an unthoughtful or evil-minded person who refuses to understand the consequences of his/her bad deeds, anyavrato one who does not keep his/her words and does bad deeds such as lying, deception, theft, violence, or amanushah one who acts subhuman because he/she does not treat others with respect and considers their joys or sorrows like his/her own. Tvam You God vadhah destroy tasya such a person, amitrahan Dear God, You are Destroyer of such enemies dasasya who behave like thieves or robbers, dambhaya please destroy them for the good of others.

According to the Vedas an evil or wicked person is called a dasyu who is like a thief or robber in the society. Such a person with his/her distorted mind and thought process as well as the destructve values not only makes his/her life miserable but also with the evil actions harms his/her family, society, the nation and eventually the world; everybody suffers due to their evil actions. According to the Vedas the following categories of persons are fit to be called dasyu to a variable degree:

First of all are akarma-lazy persons, who do not put in much effort into their work or carry out responsibilities but want rewards. They want and try to gather a lot of money and become millionaires or billionaire by any means possible but without hard work, any sweat or toil, withstanding hardships or overcoming difficulties that come along the way. Next, with this wealth gathered by ill means they want to enjoy all types of sensual pleasures and creature comforts the money can buy without sharing with others. Such persons are generally unjust, selfish, envious of others, untruthful, and often deceptive and try to gain rewards through any means possible but without honest effort. They may be bright and knowledgeable but they never do their share of the work and often claim a lot more effort than they actually contribute to a group but are always ready to demand more than their fair share of the rewards, They may fool people for a time, but their basic nature is eventually revealed. This type dasyu person in the Vedas is called akarma.

The second category of dasyu in the Vedas is called amantu, persons who are not thoughtful or are evil minded. Such persons refuse to understand and acknowledge the consequences of their wrong thoughts, words or deeds on themselves, family members, their friends, relatives, society or the nation both in the short run and the long run. Such persons do bad or wrong deeds such as deception or bribing for the fulfillment of their selfish goals which may provide them with transient benefits in the form of wealth, physical pleasure, excitement, fame or recognition. However, they do not use far sight to consider the damaging effects of their actions on the propagation of dharmic values such as truth, honesty and integrity as well as the long held other virtuous traditions, morality and culture of the society. Such persons do not value the teachings of scriptures such as the Vedas, Upanishads or the teachings of rishis (described in other scriptures) but do whatever seems expedient in their mind, even if immoral, for the success of their selfish goals. This type dasyu person in the Vedas is called amantu.

The third category of dasyu in the Vedas is called anyavrato. The word segment vrato in the word anyavrato in Sanskrit means a person(s) who takes a vrat-pledge, vow or promise to be virtuous, truthful, honest, generous, non-violnce as well as have love and respect for others. The word anyavrato means opposite of vrato persons who do not keep their promises or carry out their responsibilities, instead they perform deeds which are opposite of virtuous such as lying, deception, being ungenerous, theft and violence. Anyavrato is an atheist person who does not believe in God and His judgment and Justice that "As you sow, so shall you reap. There sole goal in life is to gain wealth by whatever means it takes, 'by hook or crook' and use the money to enjoy pleasures of all five senses. Such persons have no hesitancy to get drunk, gamble, enjoy illicit sex or use violence to accomplish their sensual pleasures. For them a belief in God, truth, honesty, pledges, their word, virtue, non-violence, generosity, selflesness, control over their senses etc have no purpose in their lives. Such persons believe in an accidental of a chance birth to their parents and do not believe in the soul, rebirth or afterlife (moksha), whereby they feel that an unhindered enjoyment of sensual pleasures and creature comforts which they can experience by any means, now and here on the earth, is the most important goal in life.

The fourth category of dasyu in the Vedas is called amanushah. The word segment manushah in the word amanushah in Sanskrit means a person(s) who lives and behaves like a normal human being who treats others with respect and considers their joys or sorrows like his/her own. Manushah embodies the average person who is a mixture of both good and bad, he/she may be self-centered but does not harm others in achieving his/her goals. (Please note that far more honorable persons than an average manushah persons are called deva-those persons who are always doing good for mankind and the universe. They are the embodiment of virtue of dharma. They are generous persons; they give to others without expecting anything in return. Amanushah persons on the other hand are opposite of manushah-persons who are mean, cruel or violent type persons who hurt others to gather wealth and use the money to enjoy sensory pleasures and creature comforts. They kill innocent persons for money or throw bombs at others on being coaxed by religious fanatics to justify their warped philosophy, but do not properly think the consequences of their actions. While such persons in appearance look like other human beings, in their actions they are subhuman because they do not treat others with respect and consider their joys or sorrows like their own. They are often worse than animals in cruelty, because most animal kill for food whereas an amanushah persons hurt or kill others for enjoyment and to show-off. They are asuras or rakshas and parasites on the society.

Dear God, for the good of virtuous persons and society You in the long haul destroy persons who behave like dasyus because they are enemies of society. You make them suffer both during this life, and after their death you give them rebirth as an animal or plant where the soul is not aware of its actions and must suffer for a prolonged period before getting the chance to be born again as a human. Dear God, give us also strength, courage, bravery, inspiration and determination to join and work together with other virtuous like minded persons in an organized manner and acting together neutralize and eliminate various types of dasyu persons and their supporters. It is only in this manner, we will be able to protect and move forward towards virtuous values in our families, society, the nation and eventually the world. On the other hand if honorable and decent persons with *dharmic* i.e. virtuous values do not get together, join hands and act united, they will not be able to defeat and uproot dasyu persons as well as their evil values that have infiltrated and permeated the society and the world. If the society at large which has many more honorable persons than *dasyus* is not organized and determined with honorable persons willing to make sacrifices of body, mind and wealth, then a small number of hard core *dasyu* persons (e.g. corrupt political or religious leaders, dictators, corrupt power hungry military strongmen etc.) can create hardship and misery for the society at large. Therefore, Dear God this is our humble prayer to You, please inspire all of us so that united in thoughts, words and actions that are based on truth we move ahead together willing to sacrifice our lives to get rid of the dasyus from our society and the nation in order to reestablish Vedic dharma values that promote God, truth, hounesty, non-violence, kindness and love for others.

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें **संस्कृत पाठ - 27 (स)** **छन्द रचना**

गतांक से आगे....

वर्णिक छन्द : वर्णिक छन्दों में वर्ण गणों के हिसाब से रखे जाते हैं । तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं । इन गणों के नाम हैं: यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण । अकेले लघु को 'ल' और गुरु को 'ग' कहते हैं । किस गण में लघु-गुरु का क्या क्रम है, यह जानने हेतु यह सूत्र याद कर लीजिए: - **यमाताराजभानसलगा:** - जिस गण को जानना हो उसका वर्ण इसमें देखकर अगले दो वर्ण और साथ जोड़ लीजिए और उसी क्रम से गण की मात्राएँ लगाइए, जैसे: यगण - यमाता = ।ऽऽ आदि लघु

मगण - मातारा = ऽऽऽ सर्वगुरु
तगण - ताराज = ऽऽ । अन्तलघु
रगण - राजभा = ऽ ।ऽ मध्यलघु
जगण - जभान = ।ऽ । मध्यगुरु
भगण - भानस = ऽ । आदिगुरु
नगण - नसल = ।।। सर्वलघु
सगण - सलगा: = ।।ऽ अन्तगुरु

मात्राओं में जो अकेली मात्रा है, उसके आधार पर इन्हें आदिलघु या आदिगुरु कहा गया है। जिसमें सब गुरु है, वह 'मगण' सर्वगुरु कहलाया और सभी लघु होने से 'नगण' सर्वलघु कहलाया। नीचे सब गणों के स्वरुप का एक श्लोक दिया जा रहा है। उसे याद कर लीजिए:

मस्त्रिगुरु: त्रिलघुश्च नकारो,
भादिगुरु: पुनरादिर्लघुर्य: ।
जो गुरुम्ध्यगतो र-लमध्य:,
सोऽन्तगुरु: कथितोऽन्तलघु:त: ।।

आगे कुछ वर्णिक छन्दों का परिचय दिया जाएगा। शेष अगले अंक में.....

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

आर्य समाज एल ब्लाक (आनन्द विहार) हरि नगर नई दिल्ली के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव 15 अगस्त 2017 को दोपहर 3:30 बजे बड़े भव्य रूप में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में यज्ञोपरान्त, पं. नन्दलाल निर्भय जी ने अपने समधुर भजनों से जनमानस को भावविभोर कर दिया। आचार्य शिव नारायण उपाध्याय जी ने योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बड़े ही सुन्दर ढंग से श्रीकृष्ण के स्वरूप की समीक्षा की।

–महेन्द्र सिंह, मंत्री

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज राजौरी गार्डन के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन 21 से 27 अगस्त के बीच किया जाएगा। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रवचन एवं सुमधुर भजनों की प्रस्तुति होगी।

– शशि प्रभा आर्य, संयोजिका

वेद शतक महायज्ञ

आर्य समाज मयूर विहार-1 के तत्त्वावधान में वेद शतक महायज्ञ एवं श्रावणी उपाकर्म का आयोजन 24 से 27 अगस्त के बीच किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य राजू वैज्ञानिक जी, दिल्ली एवं श्री भानु प्रकाश शास्त्री जी के भजन होंगे। *–वीरेन्द्र कुमार महाजन, मंत्री*

श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज शादीखामपुर महिलाओं द्वारा 8 से 13 अगस्त तक बड़े उत्साह पूर्वक यज्ञोपरान्त भजन कीर्तन तथा भजनोपदेशिका श्रीमती शकुन्तला आर्या के आध्यात्मिक व धार्मिक गीतों से तथा आचार्य सोहन जी शास्त्री द्वारा श्रावणी उपाकर्म के महत्त्व पर विवेचन पूर्ण वक्तव्य के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– अमृता देवी

सामवेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज सूरजमल विहार दिल्ली में 9 जुलाई से 27 अगस्त 2017 तक सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य उदयभानु शास्त्री होंगे। इसके अन्तर्गत भजन-संगीत, प्रवचन का आयोजन किया जाएगा। *–सुभाष ढींगरा, मंत्री*

वेद प्रचार एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज शकरपुर में वेद प्रचार एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व 12 से 15 अगस्त तक आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता सर्वश्री पं. रामचन्द्र शास्त्री, भूदेव शास्त्री, नन्दलाल निर्भय ने योगिराज श्रीकृष्ण के वैदिक स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला। श्री नन्दलाल निर्भय ने वर्तमान समय श्रीकृष्ण के स्वरूप को प्रकट करने वाले सुमधुर भजनों से श्रोताओं का मनमोह लिया। समारोह के अन्त में श्री मिश्रीलाल गुप्ता, प्रधान ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया।

–पतराम त्यागी, मंत्री

श्रावणी एवं वेद प्रचार समारोह

आर्य समाज मन्दिर बी-2 जनकपुरी नई दिल्ली के तत्वावधान में श्रावणी एवं वेद प्रचार समारोह 17 से 20 अगस्त के बीच बड़ी धूमधाम के साथ आयोजित किया गया जिसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, वैदिक प्रवक्ता श्रीमती प्रेमलता मदान जी एवं पंडित राजबीर शास्त्री जी ने भजन प्रस्तुत किये। आशीर्वचन स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी ने प्रदान किये।

– जगदीश चन्द्र गुलाटी मंत्री

आर्य समाज रानी बाग द्वारा जन्माष्टी एवं स्वतंत्रता दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य समाज रानी बाग के तत्त्वावधान 13 अगस्त 2017 को स्वामी श्रद्धानन्द पार्क रानीबाग में जन्माष्टी एवं स्वतंत्रता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने श्री कृष्ण के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ''आर्य समाज श्रीकृष्ण को योगीराज के रूप में मानता है। केवल माखन चोर एवं रासलीला के रूप में श्रीकृष्ण को देखना उचित नहीं होगा। श्रीकृष्ण ने विवाह के 12 वर्ष पश्चात् उत्तम सन्तान को जन्म दिया।'' गुरुकुल रानी बाग एवं कन्या गुरुकुल सैनिक बिहार की छात्राओं ने देशभक्ति से ओतप्रोत गीत एवं नृत्य प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती वन्दना जेतली निगम पार्षद रानी बाग ने ध्वजा रोहण किया। *–जोगेन्द्र खट्टर, मन्त्री*

श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्णजन्माष्टमी का आयोजन

आर्य समाज कीर्तिनगर 24 अगस्त से 3 सितम्बर के बीच श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्णजन्माष्टमी के अवसर पर प्रभात फेरी, यज्ञ, महिला सम्मेलन, भक्ति संगीत एवं वेद प्रवचन की अमृत वर्षा का कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। प्रवचन आचार्या नन्दिता शास्त्री चतुर्वेदी (पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी) मुख्य वक्ता डॉ. महेश विद्यालंकार जी एवं भक्ति संगीत ब्रह्मचारिणयों द्वारा प्रस्तुत किये जाएंगे। *–सतीश चड्डा, मंत्री*

स्वतंत्रता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी में 15 अगस्त 2017 को स्वतंत्रता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि माता सुदर्शन चौधरी ने ध्वजारोहण से किया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान वेद प्रकाश जी की प्रेरणा से दैनिक यज्ञ में मुख्य यजमान ईसाई समुदाय के नवयुवक चन्द्रमोहन रहे और उन्होंने यज्ञवेदी पर ही अपना जन्म दिवस मनाया। समारोह में राष्ट्रप्रेम व भक्ति से ओत-प्रोत बालक-बालिकाओं की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें हिमांशु आर्य व प्राची को विजेता घोषित किया गया। समारोह के अन्त में माता सुदर्शन चौधरी जी ने बच्चों को पारितोषिक वितरित किये। *– मन्त्री*

पृष्ठ 3 का शेष

कैसे बना पाकिस्तान.....

पाकिस्तान के निर्माण में कांग्रेस के 'हारे थके' नेताओं की भूमिका भी कम नहीं थी। वार्द्धक्य की सीमा तक पहुंचे ये निश्चय ही यह मान चुके थे कि साम्प्रदायिक विग्रह को समाप्त करने के लिए विभाजन ही एकमात्र व्यावहारिक उपाय है। यह मानकर भी उन्होंने डॉ. अम्बेडकर जैसे सुधीजनों की इस राय पर गौर नहीं किया कि जब हिन्दू-मुसलमान के सवाल पर देश का बंटवारा हो रहा है, तो यह बंटवारा पूरा होना चाहिए। 'आधा तीतर आधा बटेर' वाली नीति अन्तत: दु:खद होगी। वह हो ही रही है। विगत वर्षों में न तो पाकिस्तान स्वयं चैन से रहा और न हमें चैन लेने दिया। स्थितियां बद से बदतर होती गयीं हैं।

किन्तु क्या आज खुद पाकिस्तान विनाश के कगार पर नहीं खड़ा है? आज सिन्ध, बलोचिस्तान तथा सीमान्त प्रान्त सुलग रहे हैं। पंजाबी हुक्मरानों ने पाकिस्तान के अवाम को त्रस्त कर रखा है। और क्या पाकिस्तान प्राप्त कर वहां की राजनीति में स्थिरता आयी? एक-एक करके 1971-72 तक न जाने कितने लोग प्रधानमंत्री बन गये-लियाकत अली, ख्वाजा नाजिमुद्दीन, गुलाम मोहम्मद, मोहम्मद अली बोगरा (गंगाली), मोहम्मद अली (आई.पी.एस.) हसन शहीद सुहारवर्दी, फीरोज खां नून, आई.आई चुन्द्रीगर इन सभी ने प्रधानमंत्री की कुर्सी का आनन्द लिया; किन्तु ये सैनिक तानाशाही के शिकार बनते रहे। इस्कन्दर मिर्जा, अयूब खां, याह्या खां, जियाउल्हक और अन्तत: परवेज मुशर्रफ- इन तानाशाहों ने'इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ पाकिस्तान' का नाम बदनाम किया। जुल्फिकार अली भुट्टो को तो फांसी के तख्ते तक पहुंचाया गया। आज का पाकिस्तान अपने ही अन्तर्कलह और तालिबानी उग्रवाद के शिकंजे में फंसा है। अन्तत: वह बृहत्तर भारत का जब तक अंग नहीं बन जाता, तब तक उसे इस अराजकता से मुक्ति नहीं मिलेगी।

– नन्दनवन, जोधपुर (राजस्थान)

आर्य समाज हनुमान रोड का श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

आर्य समाज 15 हनुमान रोड का श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबन्धन) 7 से 14 अगस्त तक बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. कर्णदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ एवं सामूहित यज्ञोपवीत से हुआ तदुपरान्त डॉ. अन्नपूर्णा प्रचार्या गुरुकुल मानव कल्याण केन्द्र देहरादून के ब्रह्मत्व में यजुवेद यज्ञ सम्पन्न हुआ। वेद पाठ गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया गया तथा श्रीमती सुदेश आर्या ने सुमधुर भजनों का रसास्वादन कराया। समापन के दिन दिल्ली के विभिन्न स्कूली विद्यार्थियों के बीच 'आदर्श एवं अनुकरणीय योगिराज श्रीकृष्ण' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कु. दीप्ती प्रथम, कु. प्रिया द्विवेदी द्वितीय तथा कु. नजमुश ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। अन्त में पारितोषिक वितरण एवं शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। *–विजय दीक्षित, मंत्री*

श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स (कमला नगर) के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार कार्यक्रम प्रात: 7 से 9 बजे के मध्य 25 से 27 अगस्त के बीच आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य कुंवर पाल शास्त्री जी, भजन श्री शिवपाल आर्य(लड़सिया अलीगंज एटा) वेद कथा डॉ. छविकृष्ण शास्त्री जी प्रस्तुत करेंगे एवं अध्यक्षता आचार्य प्रेमपाल शास्त्री (अध्यक्ष पुरोहित सभा दिल्ली) करेंगे।

–सुधीर चन्द्र घई, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली

प्रधान – श्रीमती प्रमिला नैयर
मन्त्री – श्री धर्मवीर पंवार
कोषाध्यक्ष – डॉ. अर्जुन देव तनेजा

खेद व्यक्त : खेद है कि साप्ताहिक आर्य सन्देश का गत अंक 13 से 20 अगस्त, 2017 तकनीकी खराबी के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। *– सम्पादक*

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सोमवार 21 अगस्त, 2017 से रविवार 27अगस्त, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24/25 अगस्त, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 अगस्त, 2017

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्मृति में किया गया। आचार्य धर्मजीत जिज्ञासु की 102वीं जयन्ती के शुभअवसर पर उनकी सुपुत्री डॉ. देव बाला रामानाथन ने सम्मेलन का गुरुतत्व भार अपने ऊपर लिया हुआ था।

28 से 30 जुलाई तक चले इस महासम्मेलन में दूरदेशों के विभिन्न समाजों के पदाधिकारियों, संन्यासियों ने आकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। सम्मेलन में युवाओं का विशेष योगदान रहा व सम्मेलन के अन्तिम दिन ओ३म् ध्वज शोभा यात्रा बड़े ही भव्य रूप में निकाली गई। इस अवसरपर सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं महाशय धर्मपाल जी द्वारा सम्मेलन की सफलता हेतु भेजे गए सन्देशों को पढ़कर सुनाया। उन्होनें अमेरिका के आर्यजनों को इस वर्ष म्यामार में होने जा रहे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मांडले –2017 (मयांमार) के लिए निमन्त्रण भी दिया। आर्य परिवारों के नौजवान बच्चों ने यज्ञ एवं ईश्वर स्तुति प्रार्थना मन्त्रों का का कार्यक्रम रखा उसकी संयोजिका श्रीमती अमिता गुप्ता जी ने अथक परिश्रम करके बच्चों को तैयार किया, जोकि अभिनव एवं बहुत ही उपयोगी कार्य था।

महासम्मेलन का शुभारम्भ होस्ट डॉ. देव बाला जी और उनकी बहन स्नेह बाला जी ने सितार और तम्बूरा की संगत से अपने सुमधुर भजन से किया। सम्मेलन के विभिन्न सत्रों को मुख्यरूप से सर्वश्री स्वामी आर्यवेश, स्वामी प्रणवानन्द, स्वामी सम्पूर्णानन्द, स्वामी विष्वंग जी, साध्वी उत्तमा यति, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, डॉ. बलबीर आचार्य, डॉ सोम देव शास्त्री, धर्मपाल शास्त्री, आचार्य वेद श्रमि जी, प्रो.विट्ठल राव आर्य, आचार्य हरी प्रसाद, विनय आर्य (महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), डॉ. हरीश चन्द्र आर्य, डॉ. अमरजीत शास्त्री, डॉ. सुधीर आनन्द, डॉ. भूपिंदर गुप्ता, डॉ. रमेश गुप्ता, जगदीश शर्मा, महेश दम्मानी, पं. नारायण हरपाल, विराट आर्य, डॉ. नरेन्द्र जिज्ञासु, श्री अमर ऐरी (प्रधान आर्यसमाज मार्खम (कनाडा) आदि ने अपने–अपने विचारों से सभी आर्य महानुभावों को अवगत कराया। इन सभी सत्रों की अध्यक्षता एवं संयोजन श्रीमती ज्योति गांधी, डॉ. देवबाला रामनाथन, डॉ. रमेश गुप्ता, डॉ. कुल भूषण गुलाटी, श्री भूषण वर्मा आदि ने किया तथा पूरे सम्मेलन के संयोजन का दायित्व सभा प्रधान श्री विश्रुत आर्य एवं महामंत्री श्री भुवनेश खोसला ने संभाला। डॉ. देवकेतु, डॉ. हरीशचन्द्र आर्य ने प्रातः कालीन योग प्रशिक्षण शिविर का संचालन किया।

30 जुलाई को ओ३म् ध्वज शोभा यात्रा का भव्य आयोजन द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम, फ्लशिंग न्यू यार्क से किसेना पार्क तक किया गया। इस भव्य यात्रा का पूरा श्रेय डॉ. देवबाला जी को जाता है क्योंकि उनका संकल्प था कि वे अपने पूज्य पिताजी की इच्छानुसार ओ३म ध्वज शोभा यात्रा अवश्य निकालेंगी। यात्रा मार्ग में ओ३म् मन्दिर की ओर से जलपान की व्यवस्था की गई। यात्रा समापन पर पुलिस अधिकारियों एवं मेयर के प्रतिनिधियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में युवा प्रधान एवं कर्मठ कार्यकर्ता विश्रुत आर्य जी एवं योग्य महामंत्री भुवनेश खोसला का अथक परिश्रम रहा।

आर्यसमाज शिकागो में दैनिक यज्ञ के अवसर पर लिया गया सामूहिक चित्र। आचार्य हरिप्रसाद जी आर्यसमाज शिकागो में धर्माचार्य के रूप में नियुक्त हैं। हम उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

प्रतिष्ठा में,

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन बर्मा का निमन्त्रण देकर लिया आशीर्वाद

न्यूयार्क में आर्यसमाज के वरिष्ठ नेता, प्रचारक पं. रामलाल जी का आशीर्वाद प्राप्त करते महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं साध्वी उत्तमा यति जी। उन्होंने ग्याना में आगामी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने की इच्छा व्यक्त की।

बर्मा मूल के श्री सुखदेवचन्द सोनी जी, प्रधान, आर्यसमाज शिकागो एवं धर्मपत्नी श्री सरोज सोनी जी को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार (बर्मा) का निमन्त्रण एवं पुस्तक भेंट करते महामन्त्री श्री विनय आर्य जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह